

**अर्थलोभ** पुं. (तत्.) धन का लालच, धन का लोभ।

**अर्थवत्ता** स्त्री. (तत्.) 1. शब्दों की अर्थयुक्त होने की स्थिति 2. धन संपन्नता, धनवान होने का भाव या स्थिति।

**अर्थवाद** पुं. (तत्.) 1. किसी कार्य को करने के गुण या लाभ, जो न करने से हानि और उसे पहले करने वालों का बखान 2. निहित उद्देश्य से निंदा या प्रशंसा।

**अर्थवान** वि. (तत्.) 1. प्रयोजन परक, सार्थक, अभिप्राय युक्त 2. धनवान, धनी।

**अर्थविकार** पुं. (तत्.) अर्थ-परिवर्तन।

**अर्थविज्ञान** पुं. (तत्.) भाषा. भाषाविज्ञान की वह शाखा जिसके अंतर्गत भाषा की आर्थी संरचना एवं वाक्य संरचना का विश्लेषण किया जाता है। टि. आधुनिक भाषावैज्ञानिक एकमत नहीं हैं कि अर्थविज्ञान को भाषाविज्ञान की परिधि में रखा जाए।

**अर्थविज्ञानी** पुं. (तत्.) अर्थ. विज्ञानविद् वि. अर्थ वैज्ञानिक।

**अर्थविद्** वि. (तत्.) 1. अर्थ का ज्ञाता 2. तात्पर्य समझने वाला 3. तत्त्वज्ञ।

**अर्थविरोध** पुं. (तत्.) काव्य. काव्य का वह दोष जिसके अनुसार वर्णन इस प्रकार का हो जिससे अपेक्षित अर्थ का विरोधी अर्थ प्राप्त हो रहा हो।

**अर्थ विस्तार** पुं. (तत्.) भाषा वि. एक प्रक्रिया जिसके अनुसार शब्द कालांतर में अपने अर्थ का फैलाव कर लेता है। जैसे- अत्यंत प्राचीन काल में 'तैल' शब्द का अर्थ 'तिल का रस' होता था पर अब सरसों, मूंगफली इत्यादि का रस भी 'तैल' होता है।

**अर्थवैज्ञानिक** पुं. (तत्.) 1. अर्थ-विज्ञान विशेषज्ञ, अर्थविज्ञान संबंधी 2. भाषा शब्द-शक्ति तथा अर्थ परिवर्तन विषयक विशेषज्ञ।

**अर्थव्यवस्था** पुं. (तत्.) सार्वजनिक राजस्व की व्यवस्था, वित्त व्यवस्था, आय-व्यय की व्यवस्था।

**अर्थशास्त्र** पुं. (तत्.) 1. वह शास्त्र जिसमें धन की प्राप्ति, उपभोग्य वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन उपभोग, वितरण आदि का अध्ययन किया जाता है, (अर्थविज्ञान) 2. राजनीति (कौटिल्य के अनुसार)।

**अर्थशास्त्री** पुं. (तत्.) अर्थशास्त्र का ज्ञाता या विशेषज्ञ, अर्थशास्त्रविज्ञानी।

**अर्थशास्त्रीय** वि. (तत्.) अर्थशास्त्र की दृष्टि से, अर्थशास्त्र के अनुसार, आर्थिक।

**अर्थशौच** पुं. (तत्.) लेन-देन या पैसा कमाने में शुचिता या ईमानदारी, उचित अर्थ-व्यवहार।

**अर्थश्लेष** पुं. (तत्.) एक अर्थालंकार जो एक से अधिक अर्थ देने वाले शब्दों के द्वारा वाक्य के दो या अधिक अर्थ को प्रकट करता है।

**अर्थसंकोच** पुं. (तत्.) अर्थ परिवर्तन के कारण किसी शब्द के अर्थ-क्षेत्र का सीमित हो जाना। उदा. 'मृग' का मूल अर्थ 'जानवर' था, जो अब 'हिरण' तक सीमित है। विनो. अर्थविस्तार।

**अर्थहीन** वि. (तत्.) 1. निरर्थक, जिसका कोई अर्थ न हो, बेतुका, बेमानी 2. धनहीन, निर्धन।

**अर्थांतर** पुं. (तत्.) 1. भिन्नार्थ, अन्यार्थ 2. भिन्न उद्देश्य 3. दूसरा ही मतलब होने का भाव/दशा।

**अर्थांतरन्यास** पुं. (तत्.) एक अलंकार जहाँ सामान्य से विशेष का या विशेष से सामान्य का समर्थन किया जाता है उदा. गुणयुक्त वस्तु की संगति से गुणहीन भी सम्मानित होता है उदा. माला का धागा भी फूलों के साथ सिर पर धारण कर लिया जाता है।

**अर्थागम** पुं. (तत्.) 1. धन का आगमन, अर्थ की प्राप्ति या लाभ। 2. काव्य. व्यंग्य या काकु से नए अर्थ का प्राप्त होना।

**अर्थागमोपाय** पुं. (तत्.) धन प्राप्ति का उपाय, आय का स्रोत।